माँ दुर्गा की स्तुति

डॉ हिमांशु शेखर

11, नेकलेस एरिया, आर्मामेंट कालोनी

पाषाण, पुणे - 411021

विषय क्रम

स्तुति प्रस्तावना.....4

जय महिषासुरमर्दिनि माता..... 4

जय माता कात्यायनी..... 6

माता और विज्ञान..... 8

शेखर कृत मां दुर्गा चालीसा..... 10

नवरात्रा में जय जय माता..... 18

दसावतार मां की स्तुति.....21

शैलपुत्री संध्या वंदन..... 21

ब्रह्मचारिणी वंदन..... 23

चंद्रघंटा माता की स्तुति..... 24

कूष्मांडा माता की स्तुति..... 26

स्कंदमाता स्तुति..... 28

कात्यायनी माता की वंदना..... 31

कालरात्रि की आराधना..... 33

महा अष्टमी पूजन..... 35

सिद्धिदात्री स्तुति 37
अहंकारासुर 40
फुटकल स्तुति.....42
दिल माता का उपवन 42
माता का विचरण 43
माता से पुकार 44
दफ्तर में देवी मां..... 49

स्तुति प्रस्तावना

जय महिषासुरमर्दिनि माता

जय महिषासुर मर्दिनी माता,

शक्तिपुंज ऊर्जा की दाता,

हर क्लेश को दूर भगाता,

भक्ति से अब जोड़ो नाता,

नाम जपो करके जगराता ।

जय महिषासुरमर्दिनि माता ।।

नवरात्रा का शुभ दिन आता,

पुलकित हर दिल होकर गाता,

शुभ होगा हर संकट जाता,

जय जय हे जगदम्बे माता ।

जय महिषासुर मर्दिनी माता ।।

प्रकृति में आनंद समाता,

खग सुंदर संगीत सुनाता,

जीव-जंतु भी शांति पाता,

जब सानिध्य में आएं माता ।

जय महिषासुर मर्दिनी माता ।।

धूप दीप सब पावन भाता,

पुष्पांजलि अर्पण है माता,

जब प्रसाद चरणामृत पाता,

तृप्त हृदय सुख-शांति पाता ।

जय महिषासुरमर्दिनि माता ।।

जय माता कात्यायनी

जय जय जय माता कात्यायनी,

जय सिंहवाहिनी, जय नारायणी।।

कष्ट चतुर्दिक, नष्ट करो मां,

रोग, दोष से, मुक्त करो मां,

तन मन दोनों पुष्ट करो मां,

वर देकर, संतुष्ट करो मां।

जय जय जय माता कात्यायनी,

जय सिंहवाहिनी, जय नारायणी।।

बाधाओं का शमन करो मां,

शत्रु का अब दमन करो मां,

बंजर भू को चमन करो मां,

पुलकित हो रमण करो मां।

जय जय जय माता कात्यायनी,

जय सिंहवाहिनी, जय नारायणी।।

जग का नित कल्याण करो मां,

शुष्क हृदय में प्राण भरो मां,

वचनों में ग्रंथ पुराण भरो मां,

शुभ प्रकाश निर्माण करो मां।

जय जय जय माता कात्यायनी,

जय सिंहवाहिनी, जय नारायणी।।

माता और विज्ञान

आदि शक्ति क्यों हैं माता?

विज्ञान इसे यूं समझाता।

डीएनए की लगी कतारें,

गुणसूत्र मूल हैं बतलाता।

उससे ही विकास, वृद्धि सा

कार्य कोई भी कर पाता।

संतति की अनुवांशिक सारी

खोज वहीं से है आता।

माता और पिता से बच्चा

आधे आधे गुण पाता।

पर ऊर्जा वाली डीएनए

तो माता से ही है पाता।

माता से आती आई है,

ऊर्जा वो ये समझाता।

इसलिए तो मूल ऊर्जा का

स्रोत हुईं हैं जगमाता।

आदिशक्ति ही मूल स्रोत

हैं, ऊर्जादायी हैं माता।

शेखर कृत मां दुर्गा चालीसा

नवरात्रा की नौ दिन पूजा,

मां दुर्गा की नित कर पूजा।

हर दिन रूप अलग ही पावे,

सब में बस माता को ध्यावे।

श्रद्धा, भक्ति, मन से पूजा,

रोग, कष्ट, निवारण पूजा।

शक्ति, सिद्धि, सुख ले आवे,

माता को दिल में जब लावे।

शक्ति, ऊर्जा, सब आ जावे,

दिल में उनके चरण विराजे।

कार्य सभी अब पूर्ण हो जाते,

नौ दिन भक्ति करते जाते।

माता ने असुरों को मारा,

कितने थे, सबको संहारा।

तीन रूप में शस्त्र उठाए,

चंद्रघण्टा से राक्षस धाए।

कालरात्रि, कात्यायनी बन,

माता मांगे असुर सपर्पण।

रक्तबीज, दुर्गम भी हारा,

चण्ड, मुण्ड मृत्यु का चारा।

शैलपुत्री बन कर समझाया,

दुहिता का भी धर्म बताया।

पर्वत पर है प्रकट भवानी,

सिंहस्थ हुईं आ गई भवानी।

पंचम दिवस रूप से माता,

पुत्र भी योद्धा जना हे माता।

स्कंदमाता की उपमा आई,

स्नेह, आशीष साथ ले आई।

तप कर अपने ईष्ट को पाना,

महागौरी बन यही बताना।

दृढनिश्चय कर ईच्छित पा ले,

यही समझ वो जग में डाले।

ब्रह्मचारिणी बन माता रानी,

तप से शक्ति मिले बतानी।

लिया कमण्डल, माला धारी,

करें तपस्या हर नर-नारी।

सृष्टि करना जब आवश्यक,

मां कूष्माण्डा हैं फलदायक।

नौवें दिन मां सिद्धिदात्री बन,

सिद्धि प्रदत्त है हर्षित जीवन।

भोग अलग ये सारे लो गिन,

हलवा पूरी चढे एक दिन।

अष्टम दिवस चना है काला,

नवमी को है धान का लावा।

रंगों का भी साथ है अनुपम,

श्वेत वस्त्र जब दिन है पंचम।

लाल फूल और वैसा चंदन,

से कात्यायनी माता वंदन।

माता ने हर रंग है डाले,

गोरी हैं तो कभी हैं काले।

सप्तम, अष्टम को हैं काला,

गौड़ वर्ण षष्ठी को पाला।

नौ रूपों का दृश्य मनोरम,

विजयादशमी आई उत्तम।

मन माता प्रतिमा जब बनता,

भक्ति सागर आज उफनता।

प्रतिमा का भी करो विसर्जन,

पर मन प्रतिमा रहे चिरंतन।

जीवन अपना करो समर्पण,

माता का, माता को अर्पण।

हे माता! तुम अंतर्यामी,

मैं मूरख, इच्छुक, फलकामी।

जग को थोड़ा सुन्दर करना,

डर, शंका, पीड़ा सब हरना।

मुझको वो देना जो समुचित,

मांगूगा कुछ भी तो अनुचित।

इसलिए बस वंदन करता,

स्तुति के संग मंगल करता।

आप मुझे तो जाने माता,

मुझमें कितने दोष समाता।

ठीक करूं क्या छोड़ू माता,

ये भी मुझको समझ न आता।

जो भी अच्छा हो सकता है,

बिन मांगे वो मिल सकता है।

यही सोचकर करूं मैं वंदन,

बिना याचना केवल वंदन।

मुझको केवल इतना देना,

ज्ञान, ध्यान, संज्ञान दे देना।

जबतक तन में प्राण रहे,

माता चरणों में स्थान रहे।

नवरात्रा में जय जय माता

नवरात्रा में जय जय माता,

नौ रूपों से जोड़े नाता ।

शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी माता,

चंद्रघंटा, कूष्मांडा माता,

पंचम दिवस स्कंद की माता,

दिन छट्ठे कात्यायनी माता,

कालरात्रि महागौड़ी त्राता,

सिद्धरात्रि नवरूप सुहाता ।

नवरात्रा में जय जय माता,

नौ रूपों से जोड़े नाता ।

विविध दुखों को दूर भगाता,

लखि लखि रूप नयन भर आता,

मन में नूतन ऊर्जा पाता,

जो भक्ति में डूब है जाता,

भक्त तुम्हारे दर पर आता,

बिन मांगे सब कुछ पा जाता ।

नवरात्रा में जय जय माता,

नौ रूपों से जोड़े नाता ।

दसावतार मां की स्तुति

शैलपुत्री संध्या वंदन

आगमन माता का अनुपम,

मूर्त ना पर शक्ति सक्षम,

दिल बना पंडाल उसमें,

माता का लहराए परचम।

दिल बजाए आज सरगम,

भूलते सब आज हर गम,

भक्ति में गर लीन दिल तो,

आंखें भी हो जाएंगी नम।

शक्ति से काटेंगें हर तम,

दमनकारी को करें कम,

माता बस आ जाएं दिल

में, कौन कर पाए सितम?

दृश्य मनभावन विहंगम,

कष्ट अब हो जाएंगे कम,

सिंहवाहिनी शैलपुत्री,

पहले दिन अर्पित सुमन।

ब्रह्मचारिणी वंदन

नवरात्रा का दूसरा दिन,

ब्रह्मचारिणी मां का गिन,

तपस्या में वृद्धि करनी,

भक्ति का है आज दिन।

कमण्डल, माला लिए मां,

तप का संदेशा लिए मां,

कुण्डलिनी होगी जागृत,

कृपा दृष्टि किजिए मां।

आज वृद्धि तप की होगी,

त्याग और संयम की होगी,

वैराग्य से नाता जुड़े और,

सदाचारी मन की होगी।

विजय सिद्धि संग पाओ,

मन को चरणों में लगाओ,

ब्रह्मचारिणी में रमो और,

मन परिष्कृत करते जाओ।

चंद्रघंटा माता की स्तुति

चंद्रघंटा शस्त्रधारिणी,

दनुजदल विनाशिनी,

कल्याणकारी रूप है,

ये सदा मंगलकारिणी।

प्रथम है जो शस्त्र धारे,

तीसरे दिन वो पधारे,

राक्षसों का नाश कर,

इस धरा को वही तारे।

कर त्रिशूल, गदा है धारे,

धनुष और तलवार डारे,

चंद्रघंटा मां से लड़कर,

राक्षसों के झुंड हारे।

सौम्य शान्ति की डली मां,

शेर पर चढकर चली मां,

भाल का वो चांद आधा,

जगत रौशन कर चली मां।

कूष्मांडा माता की स्तुति

ब्रह्मांड रचयिता माता है,

आदि शक्ति जगराता है,

चौथे दिन मां कूष्मांडा ही,

आदिशक्ति सी त्राता हैं।

सूर्य मण्डल से नाता है,

घर उनका कहलाता है,

आंतरिक लोक की प्रभा,

दिखाई देती है वो माता है।

वो तेजपुंज जब आता है,

सब रोग दोष छंट जाता है,

अष्टभुजा दैवी प्रकाश,

नयनों में नहीं समाता है।

माता से सबकुछ आता है,

आयु, यश, साधक पाता है,

स्रष्टा हैं माता इस जग की,

बल, आरोग्य ले आता है।

जिनके पूजन से आता है,

समृद्धि, उन्नति पाता है,

सुगम करेंगी, ध्यान करो,

वो ही कूष्मांडा माता हैं।

स्कंदमाता स्तुति

स्कंदमाता नाम माता,

मूढ को ज्ञानी बनाता,

भक्त गर वंदन करे तो,

पुत्र बन है मोक्ष पाता ।

माता के इस रूप में,

श्वेत वस्त्र प्रतिरूप में,

निरोग को आशीष मिल,

छाया मिले हर धूप में ।

नाम माता पर जिज्ञासा,

पुत्र के वर्धन की आशा,

आज माता ने बताया,

पुत्र भी माता की भाषा ।

सेनापति बनकर खिले,

स्कंद तक थे सिलसिले,

अब यही है प्रार्थना कि

पुत्र पद मुझको मिले ।

वंदना स्वीकार हो मां,

आशीष की बौछार हो मां,

हर जगह ही दे सुनाई,

तेरी जय जय कार हो मां ।

कात्यायनी माता की वंदना

आज माता युद्ध इच्छुक,

खल की धड़कन है गई रुक,

कात्यायनी माता ने लाली से,

किया है रण में उत्सुक ।

आज आज्ञा चक्र स्थित,

साधकों के कर्म संचित,

आत्मदानी बने हैं सब,

चरणों में सर्वस्व अर्पित ।

षष्ठी चतुर्भुज देवी दर्शन,

यह रूप मांगे बस समर्पण ,

अभयमुद्रा, कमल और

तलवार, वरमुद्रा है दर्पण ।

त्रिदेव तेज प्रतिनिधित्व है,

ब्रज में पूजित अस्तित्व है,

फलदायिनी कात्यायनी,

माता का ये स्वामित्व है ।

माता कृपा का राज हो,

शत्रु न हो वह काज हो,

और अरि गर बन रहा तो

माता की उस पर गाज हो ।

कालरात्रि की आराधना

कालरात्रि माता विकराल,

तीन नेत्र सजते हैं भाल,

रात्रि कालिमा से भी काली,

सप्तम दिन यह रूप कमाल ।

विद्युत माला, नरमुंड माल,

माता ने आभूषण डाल,

गर्दभ पर चढ़ माता आई,

दुष्टों का बनकर के काल ।

रक्तबीज पर करने वार,

खडग कांटा लेके कटार,

रुधिर से अपने भर के गाल,

गर्दन काटी, वो गया सिधार ।

शुभंकरी करती कल्याण,

भक्तों को दे दया का दान,

अति भयंकर दिखे दुष्ट को

भक्तों को हरदम वरदान ।

माता! मेरा रखिए ध्यान,

दया क्षमा का हो अभियान,

सच्चे सारे भक्तगणों को

मिले आपसे अभय का दान ।

महा अष्टमी पूजन

महा अष्टमी है बिल्लौरी,

आज आईं हैं माता गौरी,

बना रहे हैं हलवा पूरी,

साथ में है मीठी फिल्लौरी ।

जब कुमारी थी तप कर डाला,

तन तप से जब हुआ था काला,

माता को इच्छित का वर कि,

महा गौरी बन गईं ले माला ।

चंदन लाल, लाल लें फूल,

धूप, दिया ना जाना भूल,

और भोग में याद रहे कि,

चना हो काला, यही कबूल ।

दुर्गम नामक था एक क्रूर,

राक्षस अजेय था मद में चूर,

लड़कर उसने प्राण गवाएं,

मातृ शक्ति का ऐसा नूर ।

शस्त्र की पूजा करते ठान,

यह शक्ति पूजन है जान,

नतमस्तक हो कृपा मिलेगी,

माता के चरणों में ध्यान ।

सिद्धिदात्री स्तुति

सिद्धिदात्री माता की नवमी,

नवदुर्गा है अति पराक्रमी,

नव दुर्गा की आराधना से,

बनते सारे आत्म संयमी ।

चारभुजा है सिंह सवारी,

कमल पर भी मां दिखे हमारी,

कमल शंख भी कर में राजे,

गदा चक्र से अभय हमारी ।

हर दैत्य का अब शमन कर,

नष्ट सब अतिक्रमण कर,

नौ दिन में रक्षा धर्म की,

और धरा को भी चमन कर ।

धान का लावा चढ़ाना,

दान का दीपक जलाना,

माता दयालु है अधिक,

सारी कृपा स्वच्छंद पाना ।

रोग, कष्ट का वार जिनको,

फल वांछित दरकार जिनको,

सिद्धिदात्री मां से मिलती,

सिद्धि सब एक बार उनको।

कृपा माता करें सब पर,

खड़े आंखें बंद अब कर,

आराधना सुन ले हमारी,

धरा पे हो सिद्धि बढकर ।

अहंकारासुर

जब दुष्ट दलन कर के माता,

नौ रूप धार कर के माता,

निवृत्त हुईं दशमी पर तब,

अब दुष्ट खोजतीं थी माता।

मृतप्राय विलुप्त असुर सारे,

निर्मूल किया सबको मारे,

थे चण्ड मुण्ड और रक्तबीज,

दुर्गम भी माता से हारे।

दशवें दिन को विश्रांत चित्त,
हो कर खोजे आसुरी प्रवृत्त,
दशमी को माता की भक्ति,
में अहंकार होगा निवृत्त।

फुटकल स्तुति

दिल माता का उपवन

करता हूं माता का वंदन,

सुख-दुख सारे उनको अर्पण,

जो देती वह अपना दर्पण,

करते बेमतलब सब क्रंदन ।

नाश होंगे दुख तो है सज्जन,

सुख ना आएंगे गर दुर्जन,

मांगो या फिर घिसोग चंदन,

नहीं श्वेत गर कार्य से अंजन ।

चढ़ा रहे सोने के कंगन,

मांग रहे भर झोली कुंदन,

बेहतर है माता के दर्शन,

दिल में माता का हो उपवन ।

माता का विचरण

हर ओर घूमते हैं विडाल,

अपहरण हत्या जैसे बवाल,

नारी शक्ति पर डोरे डाल,

इज्जत उनकी देते उछाल ।

हे माता! कर ऐसा कमाल,

नारी पर हमला तो भूचाल,

महिषासुर सा करना है हाल,

नारी शक्ति है बेमिसाल ।

हर नारी का उन्नत हो भाल,

साक्षात माता उनकी हो ढाल,

कुत्सित सोचो को कर बेहाल,

माता का विचरण हो सकाल ।

माता से पुकार

माता मेरी इतनी गुहार,

बचपन मुझको दे दे उधार,

वो समय त्वरित रथ पर सवार,

था दीप्त मगर अब अंधकार ।

हर पल में दिन थे तब हजार,

अब दिन में पल बनते पहाड़,

वह स्वर्णकाल अब भस्म द्वार,

यादें बस केवल बेशुमार ।

नवरात्रा पर इतनी पुकार,

लंबी छुट्टी का इंतजार,

बचपन करता था हो तैयार,

अब दिल में ना उठती बयार ।

घट स्थापन की हो पुकार,

पुष्पों की करते थे फुहार,

तब धूपबत्ती सुगंध अपार,

घंटी के श्वर करते पुकार ।

पंडाल से आती थी पुकार,

अनजान शक्ति थी ये स्वीकार,

वो खींचे मुझको बार-बार,

हर सुबह मूर्ति पर्दे के द्वार ।

स्नान किया गायब कुमार,

पंडाल गए माता के द्वार,

आएंगे वापस कब कुमार,

यह प्रश्न हुआ था तब बेकार ।

माता की मूर्ति से प्रचार,

इतना ही सीखा था विचार,

हर दुष्ट पे करना है प्रहार,

बचपन का शेखर है शिकार ।

अब दुष्ट यहां दिखते हजार,

ना कुछ मुझ से होता सुधार,

अब दलन करो लेकर अवतार,

या बचपन लौटा दे ये गुहार ।

दस दिन तक ना हो अहंकार,

क्रोध लोभ भी जाए हार,

स्थापित होता हो संस्कार,

खुद का खुद पर हो एतबार ।

सब अपनी इच्छा ले तैयार,

पर मेरी छोटी बस गुहार,

माता मेरी सुन ले पुकार,

बचपन दस दिन का दें उधार ।

दफ्तर में देवी मां

देवी मां दफ्तर में आईं,

आधे दिन की छुट्टी लाई,

बच्चे बन गए सारे फिर से,

जैसे कोई मिली मिठाई।

बड़ी रंगोली, वहां बनाई,

माता रानी शेर पे आई,

फूल दीप लगवाया ऐसा,

सज्जा मंदिर सी है पाई।

धूप जलाया, आरती गायी,

नारियल फोड़ा, बंटी मिठाई,

माता के संग फोटो खिंचा,

दफ्तर को फिर मिली विदाई।

नवरात्रा की धूम है भाई,

भक्ति शक्ति साथ में आई,

माता का बस हाथ रहे तो,

शान्ति खुशी जीवन में आई।